अध्याय 1

1.	प्रार्थना

दल के अगुवे प्रार्थना कर के अनुयायी बनने के लिए आए दल और इस पाठ्यक्रम को परमेश्वर के हाथों में सौंप दें।

2.	आराधना (20 मिनट) *(परमेश्वर के विशिष्ट गुण)* परमेश्वर असीमित है

परिभाषा

आराधना क्या है? "आराधना" की परिभाषा है:

आराधना वह अभिव्यक्ति है जो हमारी परमेश्वर के प्रति उपासना, समर्पण और निष्ठा को प्रकट करती है। जो हम अपनी भिन्न प्रकार की प्रार्थनाओं और अपनी प्रति दिन की जीवन शैली से प्रकट करते हैं।

परमेश्वर की आराधना करने के लिए, हमें ज़रूरत है कि हम अपने परमेश्वर को जान लें कि हमारा परमेश्वर कौन है। हर आराधना के समय हम परमेश्वर के केवल एक ही विशिष्ट गुण को जान सकते हैं।

मनन करना

"परमेश्वर असीम है" इस विषय पर मनन करना और सिखाना।

1. परमेश्वर की सीमाएँ असीम है पर फिर भी हम उसे जान सकते हैं।

अय्यूब 11:7-8. क्या तू परमेश्वर के गूढ़ भेद को पा सकता है? क्या तू सर्वशक्तिमान की असीमित सीमा को पूरी रीति से जाँच सकता है? वह आकाश से ऊँचा है तू क्या कर सकता है? वह कब्र से भी गहरा है - तू क्या जान सकता है?

कोई भी सर्वशक्तिमान परमेश्वर की सीमाओं की परख नहीं कर सकता है। कोई भी परमेश्वर के विषय में सब कुछ समझ और जान नहीं सकता है। किसी भी चीज़ की परिभाषा बताने का अर्थ है उसकी सीमाएँ बताना ज़रूरी हैता है। परमेश्वर की परिभाषा देने का अर्थ है उसकी सीमाओं को जान लेना। यदि कोई परमेश्वर की परिभाषा दे सकता है तो वह उसकी सीमाओं को जान लेगा और तब वह परमेश्वर से बड़ा बन जाएगा। बाइबल सिखाती है कि उसने लोगों को सीमित बनाया है। वह हमारी सीमाओं की परिभाषा देता है और वह हमारे विषय में सब कुछ जानता है। इस सत्य से हमें इस बात से परिचित हो जाना चाहिए कि इस सृष्टि में हमारा स्थान कहाँ है। यहीं हमें परमेश्वर की नज़र मे और भी नम्र बना देता है।

लेकिन यदि कोई भी परमेश्वर के असीमित होने को परख नहीं सकता है तो क्या परमेश्वर की सारी जानकारी पाना असम्भव है? क्या हम लोग परमेश्वर को जान सकते हैं? हाँ, हम परमेश्वर को जान सकते हैं लेकिन केवल उतना ही जितना परमेश्वर हम पर प्रकट कियाथा।"गुप्त बातें हमारे परमेश्वर यहोवा के वश में है, परन्तु जो प्रकट हैं वह सदा के लिए हमारे और हमारे वँश के वँश में रहेगी, इसलिए कि इस व्यवस्था की सब बातें पूरी की जाएँ।"

2. परमेश्वर तो अदृश्य है, फिर भी परमेश्वर स्वयं को लोगों पर प्रकट करता है।

कुलुसियों 1:15 वह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप है।

परमेश्वर आत्मा है। (युहन्ना 4:24) इसलिए वह मनुष्य की आखों से ओझल रहता है। किसी भी मनुष्यने परमेश्वर को नहीं देखा है और न ही देख सकता है। कोई भी व्यक्ति परमेश्वर का वर्णन नहीं कर सकता है कि वह है या नहीं या उसकाव्यक्तित्व कैसा है और न ही कोई मनुष्य परमेश्वर को देख सकता है जब तक परमेश्वर स्वयं अपने व्यक्तित्व के कुछ पहलु उस पर प्रकट न करे।

क्या हम लोग परमेश्वर को देख सकते हैं? हाँ यीशु मसीह अदृश्य परमेश्वर का प्रत्यक्ष स्वरूप है जिसे हम देख सकते हैं। सर्वशक्तिमान अदृश्य आत्मा यीशु मसीह के रूप में मनुष्य के स्वभाव को लेकर मनुष्यों के बीच रहने को आया था जिससे लोग उसे देख सकें। यीशु ने कहा, "जिसने मुझे देख लिया उस ने पिता को देखा है।"(युहन्ना 14:9) हज़ारों लोगों ने यीशु को मानव व्यक्तित्व को देखा था और उसके जीवन को भी देखा था जो अदृष्य परमेश्वर का रूप था।उन्होंने जो कुछ भी बाइबल में लिखा है वह आज हमारी सहायता करता है कि हम यीशु मसीह को देख सकें और उसे जान लें। मसीह यीशु में हम अदृश्य परमेश्वर को जान सकते और देख सकते हैं।यीशु मसीह में हम परमेश्वर के प्रेम और दया, परमेश्वर की पवित्रता और धार्मिकता, उसके चरित्र के परम गुणो को या फिर उसकी सर्वगुण सम्पन्नता को, परमेश्वर की सर्वोत्तम सामर्थ और नम्रता, उसकी सच्चाई और बुद्धिमत्ता को देख सकते हैं। संक्षेप में परमेश्वर की महिमा को। परमेश्वर की महिमा में उसके सारे गुण या सम्पूर्णताएँ उसकी उपस्थिति जो परमेश्वर की महिमा की ज्योति भी सम्मिलित हैं जिसे हम मसीह यीशु में देख सकते हैं, संक्षेप में परमेश्वर की महिमा को। परमेश्वर की महिमा में वे सभी गुण हैं जो परमेश्वर के सर्वगुण समप्न्न होने के और उसकी उपस्थिति को दर्शाते हैं। यीशु मसीह परमेशवर की महिमा की चमकती ज्योति है जो पूरी रीति से परमेश्वर के व्यक्तित्व का चित्रण करती है। (इब्रानियों 1:3) वह अदृश्य परमेश्वर जो स्वर्ग में है जिसने स्वयं को मसीह यीशु में इस पृथ्वी पर प्रकट किया था। मसीह यीशु तो इस पृथ्वी पर अपने सम्पूर्ण दैविक रूप की पूर्णता के साथ एक शरीर में ढाल कर स्वयं मनुष्य रूप में प्रकट किया था। (कुलुसियों 2:9)

3. हम परमेश्वर तक नहीं पहुँच सकते हैं फिर भी परमेश्वर स्वयं हम तक पहुँच जाता है।

1 तिमुथियुस 6:16 परमेश्वर.....और अमरता केवल उसी की है और वह अगम्य ज्योति में रहता है जिसे न किसी ने देखा है और न ही देखेगा।

परमेश्वर एक ऐसी ज्योति में रहता है जिस तक पहुँचा नहीं जा सकता है। परमेश्वर तक कोई भी पहुँच नहीं सकता है। कोई भी किसी भी रीति से चढ़ कर स्वर्ग में परमेश्वर को देखने या उससे मुलाकात करने नहीं जा सकता है। परमेश्वर न केवल अदृश्य वरन मानवीय प्रयास करने पर भी उस तक पहुँचा नहीं जा सकता है।संसार का कोई भी धर्म उस जीवित परमेश्वर तक पहुँचने में हमारी सहायता नहीं कर सकता है जिसने स्वयं को बाइबल में हम पर प्रकट किया है।

बाइबल हमें सिखाती है कि वह हम नहीं है जो परमेश्वर तक पहुँच सकते हैं लेकिन परमेश्वर स्वयं ही हम तक पहुँच जाता है। परमेश्वर स्वयं इस पृथ्वी पर आये थे कि हम पर स्वयं को प्रकट कर सकें। परमेश्वर ने एक कमज़ोर मनुष्य के स्वभाव का लिबास पहना और वह हमारे बीच रहने को आए थे। (युहन्ना 1:14; फिलिपियों 2:6-8) परमेश्वर हम तक पहुँचे थे कि हम उसे जान लें, उसे ग्रहण कर लें और उसके साथ एक निजि सम्बन्ध बना लें। इस संसार के अन्य धर्म के लिए जीवित परमेश्वर तक पहुँचना समभव नहीं है। लेकिन यीशु मसीह में अतीत के इतिहास के अनुसार जीवित परमेश्वर स्वय हम तक पहुँचे थे और आज भी वह हम तक पहुँच जाते है। केवल यीशु मसीह में ही परमेश्वर तक पहुँचना सम्भव है।

आराधना

परमेश्वर की इस रूप में आराधना करें कि वह असीम है। तीन-तीन लोगों के दल बना कर आराधना करें।

3.	**बाइबल शिक्षा** (70 मिनट)	***[शान्त समय]*** **मनपसंद सच्चा तरीका**

क. प्रेरणा

मसीह यीशु के साथ दैनिक संगति क्यों महत्त्वपूर्ण है?

1. एक साथ भोजन करने की तस्वीर।

लोग एक साथ भोजन क्यों करना चाहते हैं?
पढ़े प्रकाशितवाक्य 3:20
नोट्स. लोग एक साथ खाना इसलिए पसंद करते हैं क्योंकि इस रीति से वे एक दूसरे के साथ संगति करते हैं। बाइबल में, एक साथ भोजन करना संगति की एक तस्वीर है। यीशु मसीह नहीं चाहते हैं कि वे कलीसिया की संगति के बाहर खड़े रहें परन्तु वे तो भीतर आना चाहते हैं और लोगों के साथ संगति करना चाहते हैं। इसी रीति से जब आपने अपने दिल और जीवन में यीशु मसीह को ग्रहण कर लिया है तो पहली चीज़ जो यीशु चाहते हैं कि वह आप के साथ संगति करें। जो कोई यीशु मसीह को ग्रहण करता है वह परमेश्वर को ग्रहण करता है। (मत्ती 10:40; कुलुसियों 1:15) और जो कोई यीशु मसीह के साथ संगति करता है वह पवित्र आत्मा के द्वारा परमेश्वर के साथ संगति करता है। (युहन्ना 16:13-15)

2. यीशु मसीह के साथ संगति करने के उपाय:

आप क्या करते हैं जब आप दूसरों के साथ मिल कर खाना खाते हैं?
नोट्स. जब आप एक दूसरे के साथ खाना खाते हैं तब आप भोजन को अपने शरीर में डालते हैं पर आप एक दूसरे से आत्मिक बातें नहीं करते हैं। लेकिन जब आप यीशु मसीह से संगति करते हैं तो आप आत्मिक भोजन खाते हैं जो आपके दिल और मन में जाता है। और आप प्रार्थना में यीशु मसीह से बातें करते हैं।

यीशु किसे आत्मिक भोजन कहता है?
पढ़ेः मत्ती 4:4, युहन्ना 4:34; 1 पतरस 2:2
नोट्स. वास्तविक आत्मिक भोजन परमेश्वर का वचन है जिस को परमेश्वर ने बाइबल में प्रकट किया है। (पवित्र बाइबल या धर्मशास्त्र) एक व्यक्ति तब जीना शुरू करता है जब वह वही करता है जैसा बाइबल में लिखा है। इस लिए यीशु मसीह से अर्थात परमेश्वर के साथ संगति करने के लिए आपको सीखना है कि कैसे परमेश्वर के वचनों से स्वयं को भर लें। आपको सीखना है कि कैसे परमेश्वर के वचन को "खाना और "हज़म करना है।",और "उसके अनुसार जीना होगा"जो बाइबल में परमेश्वर आप से कहता है।

आप परमेश्वर से कैसे बातें करते है?
भजन संहिता 62:8; और लूका 11:1-4 को पढ़ें।
नोट्स. आप परमेश्वर से प्रार्थना के द्वारा बातें करते हैं। परमेश्वर से संगति करने के लिए आप को प्रार्थना करना सीखना होगा। प्रार्थना कोई धार्मिक प्रक्रिया नहीं है। इसके शब्द निश्चित नहीं होते है और न ही इसे किसी विशेष रूप से बैठ कर या खड़े होकर करना होता है। प्रार्थना तो वह समय है जिस में आप खुद से, अपनी खुशी से, एक मात्र सच्चे और जीवित परमेश्वर के साथ आत्मिक संगति करते हैं। प्रार्थना में परमेश्वर आप से व्यक्तिगत रूप से बातें करता है और आप उसका प्रतिउत्तर भी देते हैं। या फिर प्रार्थना में आप परमेश्वर के सामने अपना दिल उँडेल कर रख देते हैं और वह उसका उत्तर अपने समय से अपनी रीति से देता है। सीख लें कि परमेश्वर वचन से आप से क्या कह रहे है, और आप उसका प्रति उत्तर कैसे देंगे। अपने दिल को परमेश्वर के सामने खोल कर रखना सीख लें और वह सब कुछ जो आपके दिल में है वह सब परमेश्वर के सामने ले आएँ।

3. यीशु मसीह के साथ संगति करने की ज़िम्मेदारी

सिखाएँ - प्रकाशितवाक्य 3:20 पहले कहता है कि यीशु आपके साथ भोजन में संगति करेंगे और फिर कहता है कि आप यीशु के साथ खाना खाने में संगति करेगे।
इस उदाहण में मेज़बान कौन है?

मेज़बान के रूप में एक विश्वासी की क्या ज़िम्मेदारियाँ होती हैं?
नोट्स -जब यीशु आपके साथ खाते हैं तब आप मेज़बान हैं और यीशु मेहमान हैं।
यीशु के प्रति मेरी क्या ज़िम्मेदारियाँ हैं?
जब मैं मेज़बान हूँ तो मेरी ज़िम्मेदारी है कि मैं वह सब कुछ उसे दे दूँ जो मेरे पास है। इसमें विशेष रूप से मेरा दिल, मेरा समय, और मेरी उत्सुक्ता भी कि मैं उसके साथ संगति करूँ, लेकिन इसके साथ-साथ मुझे अपने पाप, परेशानियाँ और भय भी उसे सौंपने होंगे।

मेज़बान बन कर यीशु की क्या ज़िम्मेदारियाँ हैं?
नोट्स- जब आप यीशु के साथ भोजन खाते हैंतब यीशु मेज़बान है और आप एक मेहमान हैं।यीशु की आपके प्रति क्या ज़िम्मेदारियाँ हैं?
जब यीशु मेज़बान हैं तो मैं बहुत सी आशाएँ रख सकता हूँ। मैं चाह सकता हूँ और आशा कर सकता हूँ कि परमेश्वर मेरी संगति के समय मुझ से व्यक्तिगत रूप से बात करें या मैं ऐसी भी आशा कर सकता हँ कि परमेश्वर मुझे वह सब कुछ दे देंगे जिस की मुझे उस दिन वास्तव में ज़रूरत होगी। (इब्रानियो 4:15-16)

4. यीशु मसीह के साथ संगति प्राय: कितनी बार होनी चाहिये।

आप एक सामान्य दिन में कितनी बार भोजन खाते हैं?
नोट्स - हर दिन नियम से खाना क्यों ज़रूरी है? परमेश्वर के साथ संगति करते समय प्रकाशितवाक्य 3:20 का इससे क्या सम्बन्ध है? अधिकतर लोग दिन में दो या तीन बार भोजन करते हैं। स्वस्थ रहने के लिए और काम करने के लिए शक्ति पाने के लिए हमें केवल केवल अच्छा भोजन ही नहीं वरन नियमित रूप से भोजन करना चाहिए। इसलिए प्रकाशितवाक्य 3:20 में दशाई तस्वीर के अनुसार यह बहुत ही विवेकशील होगा कि हम प्रतिदिन परमेश्वर के साथ संगति करें।

यीशु मसीह के मानव अवतार के समय में उनकी नियमित आदत क्या थी?
पढ़े यशायाह 50:4-5; मरकुस 1:35
नोट्स -पुराने नियम में यीशु मसीह को "प्रभु का सेवक"कहा गया है। यशायाह 50 तो यीशु के विषय में भविष्यद्वाणी की गई है जो उसके पृथ्वी पर प्रथम आगमन से 700 साल पहले की गई थी। प्रतिदिन सवेरे यीशु मसीह अपने परमेश्वर पिता की सीख को सुना था और वे परमेश्वर से प्रार्थना करते रहे। इस रीति से जब यीशु इस पृथ्वी पर थे तब उनका पिता परमेश्वर के साथ संगति करने का भोर सवेरे एक नियमित समय था।

राजा दाउद की नियमित आदत क्या थी?
पढ़ें भजन 143:8,10) भजन 1:1-2, भजन 5:3
नोट्स -भोर सवेरे दाउद आशा रखता था कि वह परमेश्वर के शब्दों को सुनने पाए। और वह आशा करता था कि परमेश्वर उसे अपनी वह राह दिखाएगा जिस पर उसे जाना है। यह तभी होता था जब वह परमेश्वर के वचनों पर मनन करता था।
अपनी प्रार्थनाओं में वह अपने निवेदन परमेश्वर के सामने रखता था तब वह भरपूर आशा के साथ प्रतीक्षा करता था यह देखने को कि परमेश्वर क्या करने वाले हैं। इस प्रकार दाऊद का भी प्रतिदिन सवेरे परमेश्वर के साथ संगति करने का नियमित समय होता था।

साराँश:हम इसे परमेश्वर के साथ प्रति दिन का व्यक्तिगत समय कह सकते हैं इसे अकेले में शान्त समय या भक्ति **पूर्ण** समय भी कह सकते हैं। अपने इस निजि समय में जो आप परमेश्वर के साथ बिताते हो आप परमेश्वर के वचन को खाते हो अर्थात ग्रहण करे जो बाइबल में लिखे हैं और प्रार्थना में आप परमेश्वर के साथ बातें करते हो।

ख.विधि

परमेश्वर के साथ रोज निजि संगति का समय कैसे बिताएँ?

सिखाएँ: नीचे दी विधि जो परमेश्वर के साथ समय बिताने के लिए प्रयोग करते हैं उसे कहते हैं:

मनपसंद सच्चाई (या चुने हुए बाइबल के वचन) की विधि

इस विधि में पाँच तरीके हैं।इस अन्तर को ध्यान में रखें जो परमेश्वर के साथ निजि समय बिताया (वह विधि जिस में हम सच्चा मनपसन्द तरीका या वचन को चुन लेते हैं। और बाइबल अध्ययन की इस विधि के 5 तरीके हैं।)

एक घर में संगति करने के बाद एक अगुवे ने बाइबल से 7 प्रसंग वचन देता है, जिन को ध्यान में रखते हुए हर छोटे दल का सदस्य घर पर हफ्ते के दौरान अपने निजि समय में परमेश्वर के साथ संगति करने को कहा जाता है। ।

तरीका 1 प्रार्थना.

अपने निजि समय की शुरूआत मे पूरे होश में परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करें। आप एक प्रार्थना में परमेश्वर से कहें कि वह आप से निजि रूप से परमेश्वर के वचन से जो बाइबल में लिखे हैं, उनको अपनी आत्मा से आप पर उजागर करे। उससे माँग लें कि वह आपके जीवन को अपने वचनों के द्वारा और भी शक्तिशाली बना दे। उदाहरण के लिए आपको ऐसे प्रार्थना करनी चाहिए। "परमेश्वर मेरी आँखों को खोल दे कि मै उन अदभुत चीज़ो को देखने पाऊँ जो आपके वचन में लिखी हैं।(भजन 119:18)"

तरीका. 2 - पढ़ें

हर दिन चुने हुए 7 प्रसंगों का जो बाइबल में से पूरे हफ्ते के लिए दिए गए हैं उन को पढ़ें।

तरीका 3. - अपना मन पसंद सत्य का प्रसंग चुन लें

आपका मनपसंद प्रसंग एक सत्य वचन हो सकता है या बाइबल के प्रसंग से कुछ चुने हुए वचन हो सकते हैं जो आपने पढ़े हैं। सत्य का वह विचार जिसके विषय में परमेश्वर आप से बातें कर रहा है जिस सत्य ने आपके विचारों को प्रेरित किया है और जिन वचनों ने आपके दिल को छू लिया है।

तरीका 4.अपने चुने हुए सत्य वचन को जो आपने बाइबल से चुना है मनन करें।

आप परमेश्वर के वचन पर मनन करते हैं क्योंकि आप उस वचन की सच्चाई को समझना चाहते हैं, और उसके द्वारा अपनी सामर्थ को नया बना लें। और उसे जीवन में लागू कर सकें। मसीही व्यक्ति को मनन करते समय निम्न 4 बातों को ध्यान में रखना है।

- **विचार करो** -आपके मनपसंद प्रसंग के वचनो के अर्थ, जो उस में प्रयुक्त अलग-अलग शब्दों के हैं उन पर प्रश्न उठाएँ जैसे कौन? क्या? कहाँ? कब? क्यों? और कैसे?

- **<u>प्रार्थना करो</u> -** जब आप मनन कर रहे हैं तब परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह आप के दिल से बातें करे। और शब्द के सही अर्थ को समझा दे। और प्रकट कर दे कि वह आपको क्या समझाना चाहता है और वह आप से क्या करने को कह रहा है। विश्वास करो, वैसे बन जाओ, और वैसा ही करो जो परमेश्वर आप से कह रहा है उसका प्रतिउत्तर दो।
- **<u>समबन्ध बनाओ</u> -** अपने मन पसंद सत्य से अपने जीवन का सम्बन्ध बनाएँ या फिर उस संसार से सम्बन्ध बनाएँ जिस में आप रहते हैं। खुद से ये प्रश्न पूछे। "इस सच की ज्योति में मेरी ज़रूरत क्या है?" या "यह सत्य कैसे मेरी ज़रूरत को पूरा कर सकता है और मेरे जीवन को पुनः शक्ति से भर सकता है?""परमेश्वर मुझे इस से क्या ज्ञान देना चाहता है" याकिस पर विश्वास कराना चाहता है, क्या बनाना और मुझ से क्या कराना चाहता है.?"
- **<u>लिखो</u> -**आपके मनन करते समय जो विचार सब से महत्त्वपूर्ण थे उन्हें अपनी कॉपी में लिखें जिस में आप परमेश्वर के साथ बिताए गए समय के विषय मेंजो सीखा है उसे लिखते हैं।

5. <u>अपने मनपसंद सत्य वचनों के लिए प्रार्थना करें</u>

अपने मन पसन्द सत्य वचनों को परमेश्वर को बता कर उनके विषय में प्रार्थना करे विशेषकर उन पर जिन पर आप ने मनन किया है) फिर 4 भिन्न लोगों के लिए प्रार्थना करें।

- इन मनपसंद वचनो के अनुसार अपने विषय में प्रार्थना करें।
- इन मनपसंद वचनों के अनुसार परिवार के किसी जन के लिए प्रार्थना करें।
- इन मनपसंद वचनों के अनुसार किसी पड़ोस के जन के लिए प्रार्थना करें।
- इन मनपसंद वचनों के अनुसार किसी ऐसे व्यक्ति के लिए प्रार्थना करें जो बहुत दूर रहता हो।

ग. सुझाव

परमेश्वर के साथ निजि समय बिताने के लिए

1. <u>हर दिन परमेश्वर के साथ अपना निजि समय बिताएँ</u>

सिखाओ :प्रति दिन परमेश्वर के साथ निजि समय बिताएँ।

हर दिन परमेश्वर के साथ अकेले या दूसरों के साथ निजि समय बिताएँ।

यह निजि समय सवेरे, दोपहर, शाम या रात को किसी समय भी बिताया जा सकता है।

बाइबल को पढ़ने के लिए अपने चुने हुए सत्य प्रसंगों का प्रयोग करें।

बाइबल पढ़ने के लिए एक नियमित योजना के साथ बाइबल पढ़े (देखिए नियम पुस्तिका 1 का अतिरिक्त भाग 2)

बाइबल पढ़ने के लिए बाइबल पर चिन्ह लगाना सीख लें। (देखिए नियम पुस्तिका 1 का अतिरिक्त भाग 3)

2. <u>परमेश्वर के साथ निजि समय के लिए एक कॉपी बनाएँ</u>

सीखना परमेश्वर के साथ संगति करते हुए एक अलग कॉपी रखें ।

- तिथि लिखें
- बाइबल के प्रसंग का लेख का अँश जो आप ने परमेश्वर के साथ अपने निजि समय में पढ़ा था।
- बाइबल का वह प्रसंग जो आपके मनपसन्द सत्य के विषय में है।
- वे सभी बाइबल के महत्त्वपूर्ण सत्य जो परमेश्वर चाहता है कि आप याद रखें और दूसरों को भी बताएँ।

आपकी कॉपी - परमेश्वर के साथ आपके निजि समय में आपकी सहायता करेगा क्योंकि जो कुछ आपने सीख कर

अपनी कॉपी में लिखा है उसे आप दूसरों के साथ बाँट सकते हैं। यह आपकी सहायता करेगा कि आपको याद दिला सके कि परमेश्वर ने आप से अतीत में क्या कहा था। जब आप बार बार अपने लिखी बातों को पढ़ेंगे तो बाद में आप देखने पाएँगे कि परमेश्वर किस रीति से आप की अगुवाई कर रहा है।

3. एक दल में परमेश्वर के साथ निजि संगति करना

सिखाओ -परमेश्वर के साथ एक दल में निजि संगति में कैसे समय बिताएँ।

- **एक छोटा दल बनाएँ** एक छोटा दल बनाएँ जो चाहता है कि परमेश्वर के साथ, एक साथ मिल कर निजि समय बिताए। उस छोटे दल में परिवार के सदस्य, मित्र, विश्वासी या पड़ोसी भी हो सकते हैं। एक ऐसा समय चुन ले जो सब के लिए उपयुक्त हो। कुछ मसीही लोग भोर सवेरे मिलते हैं जिससे परमेश्वर के साथ निजि समय बिता सकें। और काम पर जाने से पहले प्रार्थना में समय बिताएँ।
- **शान्त समय** -अपने छोटे दल को और छोटे दलों में बाँट लें जिस में एक दल में केवल दो ही लोग हों। और फिर अपना मनपसंद सच का विषय चुन कर संगति करें। आप 3 या 4 लोगों के झुण्ड भी बना सकते हैं।
- **गवाही का समय** -समय के अन्त में सभी लोग बारी बारी से अपनी गवाही देंगे और बताएँगे कि उन्होंने क्या महत्त्वपूर्ण सीखा था।
- **प्रार्थना का समय** -अन्त में सब बारी बारी से प्रार्थना करें और जो कुछ उन्होने पाया है उसके विषय में प्रार्थना करेंगे।

4. एक ऐसा समय जब अपना निजि समय आप को परमेश्वर के साथ बिताना होगा।

सिखाओ -हर हफ्ते परमेश्वर के साथ निजि समय बिताएँ और निजि समय की गवाही दें।

यदि आप का दल केवल हफ्ते में एक ही बार मिलता है तो उस संगति के समय में से थोड़ा समय गवाही का रख लें। (इसके लिए देखें नियम पुस्तिका 1 का - दल के मुखिया का भाग।) हर व्यक्ति पूरे दल के साथ केवल एक ही गवाही बाँटेगा जो उसने पिछले हफ्ते में अनुभव किया था। अन्त में सब लोग छोटी-छोटी प्रार्थनाओं में जो उन आशीषों के विषय में होगी जो हमने इस गुज़रे हफ्ते में पाई थीं, सम्मिलित होंगा।

उदाहरण कि आप किस रीति से अपनी कापी में लिखेंगे

2010-07-03 – 1 थिसलुकियों 1:1-10

चुना हुआ बाइबल का वचन या मनपसंद सत्य:

1 थिसलुकियों**1:3**: हम अपने परमेश्वर और पिता के सामने तुम्हारे विश्वास के काम और प्रेम और परिश्रम और हमारे प्रभु यीश मसीह में आशा की धीरता को लगातार याद करते हैं।.

ध्यान और मनन:

मै चाहता हूँ कि मेरा यीशु मसीह पर विश्वास मेरे कर्मों के द्वारा प्रकट हो। मैं चाहता हूँ कि परमेश्वर और पड़ोसियों के लिए मेरा प्रेम और हर दिन का अनुभव हो तब मेरी आशा कभी भी हारेगी नहीं!

मेरी प्रार्थना:

(स्वयं के लिए)प्रभु आज मेरी सहायता करे कि मैं अपने विश्वास को अपने कर्मों के द्वारा दिखा सकूँ।

(परिवार के एक सदस्य के लिए प्रार्थना) प्रभु मैं चाहता हूँ कि आप मेरी बहन को विश्वास के हाथ और पैर प्रदान करें।.

(पड़ोस के किसी सदस्य के लिए प्रार्थना). कृपया मेरे मित्र पतरस को अपन प्रेम से अपनी ओर खींच लें जिससे वह आप पर विश्वास करने लगे.
(किसी ऐसे सदस्य के लिए जो बहुत दूर रहता हो). अपने देश में एक छोटी सी कलीसिया के विश्वास को पड़ोसियों के लिए एक आकर्षण बना दें।

2010-07-04 थिसुलुकियों 2:1-20

चुना हुआ बाइबल का पद या सत्य:
1 थिसुलुकियों 2:11-12 क्योंकि तुम जानते हो कि हम तुम सब से पिता के समान व्यवहार करते हैं ठीक वैसे ही जैसे एक पिता अपने बच्चो से करता है, प्रोत्साहित करते हुए और शान्ति देते हुए। हम तुम्हें उत्साहित करते हैं कि तुम ऐसा जीवन जियो जो परमेश्वर के योग्य हो क्योंकि उसने तुम्हें अपने राज्य और महिमा के लिए बुलाया है।
मनन करना:
कुछ मसीहों के लिए परमेश्वर एक माँ के समान है (पद7)जो उनके विषय में चिन्ता करती है और उनकी प्रेम से देखभाल करती है।अन्य समय पर परमेश्वर एक पिता के समान है (पद 11) जो उन को उत्साहित करके प्रेरित करता है कि वे महत्त्वपूर्ण काम करें। मैं लोगों को उत्साहित करने वाला बनना चाहता हूँ।
मेरी प्रार्थना
- (अपने लिए प्रार्थना)प्रभु, मुझे आज ही कोई ऐसा व्यक्ति दे जिसे मैं प्रार्थना द्वारा उत्साहित कर सकूँ।.
- (अपने परिवार के किसी सदस्य के लिए प्रार्थना)मेरे भाई को प्रोत्साहित करें कि वह आज अपने कार्य स्थल में सुसमाचार को बाँटे।.
- (अपने किसी पड़ोसी के लिए प्रार्थना)मेरे सहकर्मी जॉन की सहायता करें कि वह अपने निराश पड़ोसी को प्रोत्साहित करे।. - (किसी ऐसे के लिए जो बहुत दूर रहता हो) दल के अगुवों पर अनुग्रह करें कि ने अपने देश में प्रेरित होकर सताव के बीच भी सदस्यों को 6 प्रोत्साहित करते रहें।

4.	**अभ्यास** (20 मिनट)	***[शान्त समय]*** **व्यवहारिक अभ्यास का समय मत्ती 1:1 - 4:11**

अपने चुने हुए बाइबल के पद या मनपसंद सत्य का प्रयोग करें और एक दल के रूप में लेखाँश मत्ती 1:1 - 4:11 पर मनन करें।

- दल का अगुवा एक छोटी प्रार्थना करे।
- दल का अगुवा किसी से मत्ती 3:1-12 पढ़ने को कहे।
- इस लेखाँश में से हर कोई अपना मनपसंद सत्य पद चुन लें और फिर उस पर 2 मिनट तक मनन करे और उस पर कम से कम एक विचार लिखे।
- बारी-बारी हर एक को अवसर दें कि वह अपने उस विचार को सब को बताए जो उसने लिखा है।
- फिर दो-दो करके अपने चुने मनपसंद वचन को ध्यान में रखते हुए प्रार्थना करें जो उसके लिए सच है, या किसी परिवार के जन के लिए सच है या किसी पड़ोसी या किसी दूर रहने वाले व्यक्ति के लिए सच है।

1. प्रति दिन परमेश्वर के साथ निजि समय बिताएँ।

अपने मनपसंद सत्य के तरीके का प्रयोग करके जो भी बाइबल का लेखाँश दिया गया है (या फिर बाइबल के पढ़ने की सारिणी) उसके अनुसार प्रतिदिन परमेश्वर के साथ संगति करें। हर दिन की बातों को लिख लें जो भी आपको लगता है कि परमेश्वर ने आप से इस विषय में बातचीत की है। आप यह समय केवल निजि रूप से या फिर एक दल के साथ कर सकते हैं।

2. दल बना कर परमेश्वर के साथ निजि समय बिताएँ

एक दल में आप प्रतिदिन मिलें या फिर हफ्ते में एक बार उसमें गवाही बाँटने का समय अवश्य रखें। जिस में लोग जो कुछ उन्होंने अपने निजि समय में सीखा है उसे सब के साथ बाँट सकें।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट की) ***(प्रतिक्रियाएँ)*** **परमेश्वर के वचन के अनुसार प्रार्थना में प्रतिउत्तर**	

दल में सब बारी बारी से प्रार्थना करें। (प्रार्थनाएँ छोटी होनी चाहिए।) और उस विषय के प्रतिउत्तर में होनी चाहिए जो आपने आज सीखा है। या फिर आप दल को दो या तीन भागों में बाँट कर भी प्रतिउत्तर खोज सकते हैं।

6	**तैयारी** (2 मिनट) ***नियुक्त कार्य*** **अगले पाठ के लिए**	

(दल के अगवे अपने दल के हर सदस्य को लिखित रूप से तैयारी करने की सामग्री दें। या उसे कॉपी पर लिख कर घर ले जाएँ।

1.प्रणः वायदा करें कि सब लोग नियमित समय पर परमेश्वर के साथ निजि समय बिताएगे। और उसे दिन के सबसे अच्छे समय पर करेंगे।

2.परमेश्वर के साथ निजि समय बिताना: परमेश्वर के साथ आधा मत्ती अध्याय 4:12 -7:29 पढ़ने में समय बिताएँ। उससे सत्य वचन के चुनाव के आधार पर जो कुछ समझा है और सीखा है उसकोकापी में लिख लें।

3. बाइबल अध्ययनः बाइबल का पहला अध्ययन पाठ लूका 8:4-15 के आधार पर घर पर तैयार करें। जिसका विषय है, "मैं परमेश्वर के वचन का प्रतिउत्तर कैसे दूँ?"

4. प्रार्थनाः इस हफ्ते किसी विशेष व्यक्ति के लिए या किसी विशेष बात के लिए प्रार्थना करें।

5. अपने नोट्स पूरे करेः चेले बनाने के विषय में, और जो भी आपने सीखा है उसके नोट्स तथा जो9आपने तैयारी की है उसके विषय में नोट्स पूरे करें।